हिन्दी

MODEL PAPER 7

कक्षा-X

समय : 3 घंटे 15 मिनट

पूर्णांक : 80

खंड 'अ'

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 1 से 5)

हम एक ऊँची ग्राम-सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। हमारे देश की विशालता, जनसंख्या की विशालता और हमारी भूमि की स्थिति तथा जलवायु ने मानो यह तय कर दिया हो कि उसकी सभ्यता ग्राम-सभ्यता ही होगी। उसके दोष मशहूर हैं, लेकिन उनमें कोई ऐसा नहीं है, जिसका उपचार न हो सकता हो। इस सभ्यता को मिटाकर उसकी जगह शहरी सभ्यता को जमाना असम्भव प्रतीत होता है। इसलिए यह मानकर कि हम लोगों को वर्तमान ग्राम सभ्यता को ही कायम रखना है और उसके दोषों को दूर करने का प्रयत्न करना है, हमें कुछ विकल्प ढूँढ़ने होंगे। यह तब सम्भव है जब देश का युवावर्ग ग्रामीण जीवन को अपना ले। अगर वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अपने जीवन का तौर तरीका बदलना होगा और अपनी छुट्टियों का कुछ भाग अपने स्कूल अथवा कॉलेज के आस-पास के गाँव में बिताना होगा। जो अपनी शिक्षा पूरी कर चुके हो या शिक्षा ले ही न रहे हो, उन्हें गाँवों में बसने का इरादा कर लेना चाहिए। गाँवों में जाकर काम करने से हम चौंकते हैं। हम शहरी लोगों को देहाती जीवन अपनाना बहुत जटिल प्रतीत होता है। बहुतों के शरीर ही गाँव की कठिन चर्या को सहन करने से इनकार कर देते हैं, परन्तु यदि हम स्वराज्य की स्थापना जनता की भलाई के लिए करना चाहते हैं तो इस कठिनाई का मुकाबला हमें साहस के साथ ही नहीं, बल्कि वीरता के साथ अपने प्राणों की बाजी लगाकर के करना होगा। आज तक देहाती लोग हमारे जीवन का पोषण करने के लिए मरते आए हैं, अब उनके जीवन का पोषण करने के लिए हमें मरना होगा। निःसन्देह उनके मरने और हमारे मरने में मौलिक अन्तर होगा। वे बिन जाने और अनिच्छापूर्वक मरे हैं। उनके इस विवश बलिदान ने हमें गिराया है। अब यदि हम ज्ञानपूर्वक और इच्छापूर्वक मरेंगे तो हमारा बलिदान हमें और हमारे साथ समूचे राष्ट्र को ऊपर उठाएगा।

(1) हम कैसी सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं? [1]

(अ) प्राचीन सभ्यता के
(ब) नवीन सभ्यता के
(स) ऊँची ग्राम सभ्यता के
(द) शहरी सभ्यता के

(2) हमारी सभ्यता ग्राम सभ्यता ही होगी, यह किसने तय किया?[1]

(अ) हमारे देश की विशालता ने
(ब) हमारे देश की जलवायु ने
(स) हमारी भूमि की स्थिति ने
(द) उपर्युक्त सभी ने

(3) हमें अपने जीवन का तौर तरीका क्यों बदलना होगा? [1]

(अ) देश का युवा बदल जाए
(ब) यदि युवाओं में कोई उत्साह नहीं हो
(स) यदि देश का युवा वर्ग ग्रामीण जीवन अपना ले
(द) यदि देश का युवा वर्ग शहर में चला जाए

(4) जो अपनी शिक्षा पूरी कर चुके हो या शिक्षा न ले रहे हो, उन्हें इरादा कर लेना चाहिए? [1]

(अ) विदेश जाने का
(ब) दूसरे शहर में जाने का
(स) अपनी पढ़ाई पूरी करने का
(द) गाँव में बसने का

(5) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए- [1]

(अ) शहरी जीवन की भागदौड़
(ब) जीवन में परिवर्तन
(स) गाँव और शहर
(द) ग्राम विकास में युवाओं की भूमिका

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 6 से 10)

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलती
युग बंदिनी हवाएँ
प्रश्न- चिह्न बन खड़ी हो गईं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इंदु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।
ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी
यह विश्वास अमर है
जनगंगा में ज्वार
पहरुए, सावधान रहना
लहर तुम प्रवहमान रहना

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(6) आज प्रभंजन बनकर कौन चल रही है? [1]
(अ) लहरें
(ब) तेज हवाएँ
(स) पेड़ों की पत्तियाँ
(द) सूर्य की धूप

(7) आज कौन-सी प्रतिमा टूट रही है? [1]
(अ) पुराने सिंहासन की
(ब) किसी की नहीं
(स) नए सिंहासन की
(द) राजाओं के सिंहासन की

(8) कवि ने किसे सावधान रहने के लिए कहा है? [1]
(अ) किसानों को
(ब) जवानों को
(स) पहरेदारों को
(द) किसी को नहीं

(9) शत्रु के लौट जाने पर भी किसका डर है? [1]
(अ) उसके वापस आने का
(ब) उसके युद्ध सामग्री का
(स) उसके भाग जाने का
(द) उसकी छायाओं का

(10) कवि के अनुसार हमारे मन में कौन-सा विश्वास अमर है? [1]
(अ) अपना स्वार्थ सिद्ध करने का
(ब) सफलता पाने का
(स) नई जिंदगी आने का
(द) इनमें से कोई नहीं

(11) अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है? [1]
(अ) अनुभव आवश्यक है, अनुभूति नहीं।
(ब) दोनों में कोई समानता नहीं है।
(स) अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है।
(द) अनुभव अनुभूति से गहरा होता है।

(12) टुन्नू ने कजरी दंगल में किसकी ओर से भाग लिया? [1]
(अ) खोजवां बाज़ार वालों की
(ब) पलटन बाजार वालों की ओर से
(स) लालबाग वालों की ओर से
(द) बजरडीहा वालों की ओर से

2. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. कक्षा, भीड़, सेना, झुण्ड, परिवार, गिरोह आदि शब्द ..... के अन्तर्गत आते हैं। [1]
2. अपने लिए प्रयोग होने वाले सर्वनाम को .....कहते हैं।[1]
3. विशेषण शब्द (पद) जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है उसे ..... कहते हैं। [1]
4. जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले संपन्न हुई हो तो पहले संपन्न होने वाली क्रिया ..... कहलाती है। [1]
5. जिन अव्यय शब्दों के द्वारा वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरे शब्दों के साथ प्रकट होता है, उन्हें .....कहते हैं।[1]
6. 'दुरात्मा' शब्द में ..... उपसर्ग है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए।

1. दीर्घ और यण संधि में अन्तर लिखिए। [1]
2. अव्ययीभाव समास किसे कहते है? [1]
3. 'कोल्हू का बैल होना' मुहावरे का अर्थ लिखिए। [1]
4. 'छठी का दूध याद आना' लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग लिखिए। [1]
5. ऋतुराज की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए। [1]
6. वसंत के समय फूल न खिलने का क्या आशय है? [1]
7. किसकी मुसकान इतनी मनमोहक है कि यह मुर्दे में भी जान डाल सकती है? [1]
8. यतींद्र मिश्र का जन्म कब व कहाँ पर हुआ? [1]
9. भदंत आनंद कौसल्यायन ने किन मनोभावों को मानव-संस्कृति का जनक माना है? [1]
10. 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' निबन्ध का मूल विषय क्या है? [1]
11. लेखक को हिरोशिमा पर कविता लिखने की प्रेरणा किससे मिली? [1]
12. दुक्कड़ किसे कहते हैं? [1]

खंड 'ब'

प्रश्न संख्या 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम उत्तर सीमा 45 शब्द हैं।

4. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुन: लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए? [2]
5. दुलारी का उपेक्षापूर्ण व्यवहार देखकर टुन्नू चला गया पर इसके बाद दुलारी के मनोभावों में क्या-बदलाव आए? [2]
6. कभी-कभी बाहरी दबाव भी भीतरी उन्मेष बन जाते हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए। [2]
7. समुच्चयबोधक अव्यय की परिभाषा लिखिए। [2]
8. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है? [2]
9. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।[2]
10. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं? [2]
11. 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन में उमड़े प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [2]
12. भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार असभ्यता किसे कहेंगे?[2]
13. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर, वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी? [2]
14. मूर्ति की कमी को कौन और किस तरह पूरा करने का प्रयास करता था? [2]
15. 'देव' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]
16. 'भदंत आनंद कौसल्यायन' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

खंड 'स'

17. निम्नलिखित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [1+2]
हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

'ओह', नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया, 'आदाब-अर्ज', जनाब, खीरे का शौक फ़रमाएँगे?
नवाब साहब का सहसा भाव-परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया, आप शराफ़त का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया, 'शुक्रिया, किबला शौक फरमाएँ।'

अथवा

किंतु, खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे- साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता!

18. निम्नलिखित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। [1+2]

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

अथवा

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

19. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? [3]

अथवा

संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं? [3]

20. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए। [3]

अथवा

लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए। [3]

खंड 'द'

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300-350 शब्दों में एक सारगर्भित निबंध लिखिए। [4]

(अ) एक हिल स्टेशन की यात्रा
(1) यात्रा का सौंदर्य
(2) आवास-व्यवस्था
(3) देलवाड़ा के जैन मंदिर
(4) अन्य दर्शनीय स्थल

अथवा

(ब) शीत ऋतु
(1) शीत ऋतु का परिचय
(2) शीत ऋतु का आगमन
(3) शीत ऋतु का महत्व
(4) शीत ऋतु की विशेषताएं

अथवा

(स) मेरी प्रथम रेल यात्रा
(1) मेरी प्रथम रेल यात्रा का परिचय
(2) मेरी यात्रा का आरंभ
(3) रेल के बाहर पर्वतीय दृश्य
(4) यात्रा की समाप्ति

अथवा

(द) मेरा विद्यार्थी जीवन
(1) परिचय
(2) अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता
(3) सहपाठियों की यादें
(4) एक विद्यार्थी का कर्तव्य

22. अपने बड़े भाई के विवाह में अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए। [4]

अथवा

आपकी एस.ए. 1 की परीक्षाएँ अगले महीने से हैं, परंतु अंग्रेजी और गणित का पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाया है। पाठ्यक्रम पूरा न होने के कारणों का उल्लेख करते हुए अंग्रेज़ी और गणित विषयों की अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित करवाने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए। [4]

23. आपने अपना नया कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र खोला है। यहाँ प्रवेश लेने के लिए शिक्षार्थी आकर्षित हों, इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

अथवा

उत्कर्ष कोचिंग सेन्टर में छात्रों को प्रवेश लेने हेतु आकर्षित करते हुए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 07

खण्ड - अ

1.

(1) (स) ऊँची ग्राम सभ्यता के
(2) (द) उपर्युक्त सभी ने
(3) (स) यदि देश का युवा वर्ग ग्रामीण जीवन अपना ले
(4) (द) गाँव में बसने का
(5) (द) ग्राम विकास में युवाओं की भूमिका
(6) (ब) तेज हवाएँ
(7) (अ) पुराने सिंहासन की
(8) (स) पहरेदारों को
(9) (द) उसकी छायाओं का
(10) (स) नई जिंदगी आने का
(11) (स) अनुभव से अनुभूति गहरी चीज़ है।
(12) (द) बजरडीहा वालों की ओर से

2.

(1) समूहवाचक संज्ञा (2) निजवाचक सर्वनाम
(3) विशेष्य (4) पूर्वकालिक क्रिया
(5) सम्बन्धबोधक अव्यय (6) दुर्

3.

1. **दीर्घ संधि-** दो सजातीय या समान स्वरों के मेल से स्वरों में जो परिवर्तन होता है, उसे दीर्घ स्वर सन्धि कहते हैं।
   यण संधि- ह्रस्व अथवा दीर्घ 'इ', 'उ', 'ऋ' के बाद यदि कोई भिन्न स्वर आता है तो 'इ', 'ई' के बदले 'य' तथा 'उ', 'ऊ' के बदले 'व' एवं 'ऋ' के बदले 'र' हो जाता है तो उसे यण स्वर संधि कहते हैं।
2. जिस समास में प्रथम (पूर्व) पद अव्यय हो और जो उत्तरपद के साथ जुड़कर पूरे पद को अव्यय बना दे, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।
3. कोल्हू का बैल होना:- निरन्तर परिश्रम करना।
4. वाक्य- अखाड़े में लड़ते समय श्याम पहलवान ने घनश्याम को छठी का दूध याद करा दिया।
5. ऋतुराज की रचनाएँ- पुल पर पानी, लीला मुखारविंद।
6. वसंत के समय फूल न खिलने का आशय- उचित अवसर का लाभ न मिलना।
7. नन्हें शिशु की मुसकान इतनी मनमोहक है कि यह मुर्दे में भी जान डाल सकती है।
8. यतींद्र मिश्र का जन्म सन् 1977 में अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में हुआ।
9. लेखक ने 'भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा और त्याग' को मानव संस्कृति का जनक माना है।
10. इस निबन्ध का मूल विषय स्त्री शिक्षा को बढ़ाना तथा शिक्षा के अर्थकारी स्वरूप को प्रकट करना है।
11. हिरोशिमा की यात्रा के समय एक पत्थर पर उभरी मानव छाया से लेखक को हिरोशिमा पर कविता लिखने की प्रेरणा मिली।
12. शहनाई के साथ बजाए जाने वाले तबले बाजे को दुक्कड़ कहते है।

खण्ड - ब

4. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को लगाने के लिए मूर्तिकार ने अनेक प्रयत्न किए। उसने सबसे पहले उस पत्थर को खोजने का प्रयत्न किया जिससे वह मूर्ति बनी थी। इसके लिए पहले उसने सरकारी फाइलें ढूँढ़वाईं। फिर भारत के सभी पहाड़ों और पत्थर की खानों का दौरा किया। फिर भारत के सभी महापुरूषों की मूर्तियों का निरीक्षण करने के लिए पूरे देश का दौरा किया। अंत में जीवित व्यक्ति की नाक काटकर जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर लगा दी।

5. दुलारी ने न टुन्नू की लाई खद्दर की साड़ी स्वीकार की और न उससे उचित व्यवहार किया। इससे आहत होकर उसकी व्यथा आँसू बनकर टपक पड़ी, जो उसके ही पैरों के पास उस साड़ी पर जा गिरी थी। टुन्नू बिना कुछ कहे सीढ़ियाँ उतरता चला गया और दुलारी उसे देखे जा रही थी, परंतु उसके नेत्रों में कौतुक और कठोरता का स्थान करुणा की कोमलता ने ग्रहण कर लिया था। उसने भूमि पर पड़ी खद्दर की धोती उठाई और स्वच्छ धोती पर पड़े काजल से सने आँसुओं के धब्बों को बार-बार चूमने लगी।

6. कई बार लेखक का मन कुछ लिखने को नहीं होता है परंतु प्रकाशक और संपादक का आग्रह उसे लेखन के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा आर्थिक विवशता भी लिखने को विवश करती है तब इस तरह से लिखा गया साहित्य भी आंतरिक अनुभूति को जगा देता हे। इससे लेखक इन बाह्य दबावों के बिना भी लिखने को तत्पर हो जाता है क्योंकि ये बाह्य दबाव केवल सहायक साधन का ही काम करते हैं, फिर भी लेखक अच्छा लेखन कर जाता है।

7. जो अव्यय दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ते हैं या पृथक् करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

8. उद्धव के व्यवहार की तुलना दो वस्तुओं से की गई है-
- कमल के पत्ते से जो पानी में रहकर भी गीला नहीं होता है।
- तेल में डूबी गागर से जो तेल के कारण पानी से गीली नहीं होती है।

9. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' नामक पाठ में निहित संदेश यह है कि हमें क्रोध करने से बचना चाहिए। यह हमारे बुद्धि विवेक का नाश कर देता है। क्रोधी व्यक्ति ऐसे कार्य करता है जिससे वह उपहास का पात्र बन जाता है। हमें सदैव विनम्र, शांत एवं कोमल-व्यवहार करना चाहिए। ऐसे व्यवहार से हमारे बिगड़े काम भी बन जाते हैं तथा हमें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

10. कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते हैं क्योंकि उनका जीवन दुखदायी घटनाओं से भरा पड़ा है। अपनी सरलता के कारण उन्होंने कई बार धोखा भी खाया है। वे मज़ाक का कारण नहीं बनाना चाहते। उन्हें लगता है कि उनकी आत्मकथा में कुछ रोचक और प्रेरक नहीं है।

11. फागुन का सौंदर्य अन्य ऋतुओं और महीनों से बढ़कर होता है। इस समय चारों ओर हरियाली छा जाती है। खेतों में कुछ फसलें पकने को तैयार होती हैं। सरसों के पीले फूलों की चादर बिछ जाती है। लताएँ और डालियाँ रंग-बिरंगे फूलों से सज जाती हैं। प्राणियों का मन उल्लासमय हुआ जाता है। ऐसा लगता है कि इस महीने में प्राकृतिक सौंदर्य छलक उठा है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

12. लेखक के अनुसार जब मनुष्य दूसरों के विनाश के लिए विध्वंसक हथियार बनाता है तो उसके द्वारा बनाये जाने वाले हथियारों जैसे बम, मिसाइलें, परमाणु बम आदि को असभ्यता ही कहेंगे।

13. सुषिर-वाद्यों से अभिप्राय उन वाद्यों से है जिनमें सूराख होते हैं और जिनमें फूँक मारकर बजाया जाता है। शहनाई, बाँसुरी, श्रृंगी आदि सुषिर वाद्य के अंतर्गत आते हैं।

इन सुषिर वाद्यों में शहनाई सबसे सुरीली और कर्ण प्रिय आवाज वाली होती है, इसलिए उसे सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई।

14. नेताजी की मूर्ति चश्माविहीन थी। इससे उनका व्यक्तित्व अपूर्ण-सा लगता था। इस कमी को पूरा करने का प्रयास कैप्टन चश्मेवाला करता था। वह नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगा दिया करता था। इस प्रकार वह मूर्ति की कमी और नेताजी के व्यक्तित्व की अपूर्णता को भरने का प्रयास करता था।

15. महाकवि देव रीतिकाल के प्रमुख आचार्य कवि माने जाते हैं। अनेक आश्रयदाताओं के आश्रय में रह कर इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। इनका जन्म इटावा (उ.प्र.) में सन् 1673 में हुआ। इनका पूरा नाम देवदत्त द्विवेदी था। रीतिकालीन कवि होने के कारण इनकी कविताओं का संबंध दरबारों एवं आश्रयदाताओं से अधिक था। इनके काव्य-ग्रंथों की संख्या 52 से 72 तक मानी गई है। 'रस-विलास', 'भाव-विलास', 'काव्य-रसायण', 'भवानी-विलास' आदि प्रमुख ग्रंथ हैं। इनके काव्य में भक्ति-प्रेम, श्रृंगार तथा प्रकृति-चित्रण के भाव प्रमुखता से प्राप्त होते हैं। शब्दों की आवृत्ति के जरिये नया सौन्दर्य पैदा करके सुंदर ध्वनि चित्र प्रस्तुत किए हैं।

16. भदंत आनन्द कौसल्यायन का जन्म सन् 1905 में पंजाब के अंबाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ था। बचपन का नाम हरदास था। हिन्दी सेवक कौसल्यायनजी बौद्ध भिक्षु थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में जीवन समर्पित कर दिया। उनकी पुस्तकें 'भिक्षु के पत्र', 'जो भूल न सका', 'हा! ऐसी दरिद्रता', 'बहानेबाजी', 'यदि बाबा न होते', 'रेल का टिकट', 'कहाँ क्या देखा' आदि प्रमुख हैं।

उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के माध्यम से देश-विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सरल, सहज, बोलचाल की भाषा में लिखे उनके निबंध, संस्मरण, यात्रा और वृत्तांत काफी चर्चित रहे। वे गाँधीजी के साथ लम्बे अर्से तक वर्धा में रहे। 1988 में उनका निधन हो गया।

खण्ड - स

17. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश लेखक यशपाल द्वारा रचित व्यंग्य रचना 'लखनवी अंदाज' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें लेखक नवाब साहब की सभी भाव-भंगिमाओं पर नजर डाल रहे हैं।

व्याख्या- लेखक यशपाल बता रहे हैं कि नवाब साहब की आजादी में दखल देने हेतु जैसे ही लेखक ने डिब्बे में प्रवेश किया। नवाब साहब की मुख-मुद्रा ही बदल गई। लेखक आंखों के किनारे से नवाब साहब की प्रत्येक हरकत पर नजर रखे हुए थे। नवाब साहब कुछ देर तक तो गाड़ी की खिड़की से बाहर देख कर स्थिति को देखते रहे और सोचते रहे। अचानक उन्होंने 'ओह' कह कर लेखक को सम्बोधित किया। ऐसा करने के पीछे यह दिखाना था कि उन्हें अभी अचानक ही ध्यान आया कि उनके साथ डिब्बे में कोई और भी है।

नवाब साहब ने लखनवी अंदाज में लेखक का अभिवादन किया और पूछा कि क्या वह खीरा खायेंगे? नवाब साहब का अचानक इस तरह बदल जाना लेखक को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने इसके पीछे नवाब की सोच क्या है, यह समझ लिया कि नवाब साहब शराफत, सादगी का घमण्ड बनाये रखते हुए मामूली लोगों को इसमें लपेटना चाहते हैं। ताकि हाँ कहने पर वे उस खीरे को देकर दानी बन जायें और अपनी रईसी व बड़प्पन को प्रदर्शित करें। लेखक उनकी इस चाल को समझकर खीरा लेने से मना करते हैं और कहते हैं कि आप ही खाइये।

विशेष-

(i) लेखक ने नवाबी दिमाग के प्रदर्शन की भावना को प्रकट किया है।

(ii) उर्दू-हिन्दी का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग हुआ है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित रेखाचित्र 'बालगोबिन भगत' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें बालगोबिन, जो रेखाचित्र में मुख्य पात्र है उसके बारे में बताया है।

व्याख्या- बेनीपुरी जी 'बालगोबिन भगत' रेखाचित्र में उनके बारे में बताते हुए कहते है कि वे खेतीबाड़ी करते थे, परिवार भी साथ रखते थे जिसमें उनका पुत्र और पुत्रवधू थी। वैसे तो बालगोबिन साधु प्रवृत्ति के भक्त आदमी थे। साधु की तरह सज्जन, सरल, वाकपटु, मोह-माया से रहित, सभी विशेषताओं में खरे थे। भक्त कवि 'कबीर' को अपना 'साहब', 'स्वामी', 'प्रभु', 'ईश्वर', सभी कुछ मानते थे। संत कबीर की शिक्षाओं को उन्होंने अपने दैनिक जीवन में उतार रखा था।

वे उन्हीं के गीतों का पाठ करते, उन्हीं के आदेशों पर चलते, कभी असत्य नहीं बोलते, सबसे खरा व्यवहार अर्थात् सच्चा व्यवहार करते, उनके व्यवहार में कोई झूठ, स्वार्थ, लाग-लपेट नहीं होता था। किसी को भी दो टूक कहने में संकोच नहीं करते थे। चाहे कोई बुरा माने या अच्छा वे सदैव खरी-खरी बात ही कहते थे। न किसी से बिना बात के बेकार में झगड़ा करते न किसी की चीज उससे बिना पूछे छूते और ना ही किसी की वस्तु उपयोग में लेते। कई बार नियम को बहुत गहराई तक ले जाते कि लोगों को उनका व्यवहार देखकर आश्चर्य ही होता था।

विशेष-

(i) लेखक ने बालगोबिन भगत के व्यवहार को कबीर के समान बताया है कि वे सदैव सबसे संतुलित एवं सत्य व्यवहार रखने वाले व्यक्ति थे।

(ii) खड़ी बोली हिन्दी का परिनिष्ठित रूप है। भाषा शैली सरल-सहज है।

18. **संदर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक "क्षितिज भाग-2" में संकलित कविता "छाया मत छूना" से लिया गया है। इसके रचयिता "श्री गिरिजाकुमार माथुर जी" हैं।

प्रसंग- यह कविता अतीत की स्मृतियों को भूल वर्तमान का सामना कर भविष्य का वरण करने का संदेश देती है। इस पद्यांश में कवि ने

स्पष्ट किया है कि हमें बीते हुए सुख को याद करके अपने वर्तमान के दु:ख को अधिक गहरा नहीं करना चाहिए।

व्याख्या- इस कविता में कवि ने बताया है कि हमें अपने भूतकाल को पकड़ कर नहीं रखना चाहिए, चाहे उसकी यादें कितनी भी सुहानी क्यों न हो। जीवन में ऐसी कितनी सुहानी यादें रह जाती हैं। आँखों के सामने भूतकाल के कितने ही मोहक चित्र तैरने लगते हैं। प्रेयसी के साथ रात बिताने के बाद केवल उसके तन की सुगंध ही शेष रह जाती है। कोई भी सुहानी चाँदनी रात बस बालों में लगे बेल के फूलों की याद दिला सकती है। जीवन का हर क्षण किसी भूली सी छुअन की तरह रह जाता है। कुछ भी स्थाई नहीं रहता है। इसलिए हमें अपने भूतकाल को कभी भी पकड़ कर नहीं रखना चाहिए।

विशेष-

(i) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है।

(ii) कवि ने जीवन में आगे बढ़ने तथा भूतकाल की बात को पकड़ कर न बैठने की बात कही है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' से लिया गया है।

प्रसंग- इस पद में गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कृष्ण द्वारा भेजे गये हृदय विदारक संदेश को सुनकर गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हे उद्धव! हमारे मन की बात मन में ही रह गई। वे कृष्ण से बहुत कुछ कहना चाहती थी परंतु अब वे नहीं कह पाएगी। अब तक हम उनके आने की अवधि के सहारे अपने तन और मन से इस विरह व्यथा को सह रही थी। परंतु अब तुम्हारे द्वारा दिये गये संदेश को सुनकर हमारी विरह-व्यथा भड़क उठी है। विरह सागर में डूबती गोपियों को जहाँ से सहायता मिलने की आशा थी, वही से इस योग-संदेश रूपी जल की ऐसी तेज धारा बह रही है कि वह हमारे प्राण लेकर ही रुकेगी। सूरदास गोपियों के माध्यम से कह रहे है कि कृष्ण ने सभी मर्यादाएँ त्याग दी हैं। अब हम धैर्य किस प्रकार धारण करें?

विशेष-

(i) ब्रज भाषा का सहज प्रयोग हुआ है।

(ii) 'अवधि अधार आश, आवन की', 'बिरहिनि बिरह', 'धीर धरहिं क्यौं' में अनुप्रास अलंकार तथा 'सुनि-सुनि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(iii) गीति शैली का प्रयोग भी किया गया है।

19. गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं-

1. उन्होंने कहा कि उनकी प्रेम – भावना उनके मन में ही रह गई है। वे न तो कृष्ण से अपनी बात कह पाती है, न अन्य किसी से।
2. वे कृष्ण के आने के इंतज़ार में ही जी रही थीं, किंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर योग-संदेश भिजवा दिया। इससे उनकी विरह-व्यथा और अधिक बढ़ गई है।
3. वे कृष्ण से रक्षा की गुहार लगाना चाह रही थीं, वहाँ से प्रेम का संदेश चाह रही थीं। परंतु वही से योग-संदेश की धारा को आया देखकर उनका दिल टूट गया।
4. वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे। वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे। किंतु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

अथवा

संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और भी बहुत से क्षेत्रों में होते हैं-

- खेल में जीत का श्रेय कैप्टन को मिलता है जबकि विजेता बनाने में कई खिलाड़ियों का योगदान होता है इसके अलावा उनके कोच और अन्य अनेक लोगों का योगदान होता है।
- राजनीति के क्षेत्र में चुनाव में जीत केवल उम्मीदवार विशेष की होती है, परंतु उसे विजयी बनाने में छोटे नेताओं के अलावा चुनावी चंदा देने वाले, प्रचार करने वाले जैसे बहुतों का योगदान होता है।
- सिनेमा के क्षेत्र में फ़िल्म को सफल बनाने में अगणित लोगों का योगदान होता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाफल बढ़ने का श्रेय अधिकारियों को मिलता है पर उसके लिए अध्यापकगण एवं अन्य कर्मचारियों का अमूल्य योगदान होता है।
- किसी युद्ध को जीतने में सेनापति के अलावा बहुत से वीरों का योगदान होता है।

20. बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। यह पाठ के निम्नलिखित मार्मिक प्रसंगों से ज्ञात होता है-

- भगत ने अपने इकलौते पुत्र के निधन पर न शोक मनाया और न उसके क्रिया-कर्म को ज्यादा तूल दिया।
- उन्होंने पुत्र केशव को स्वयं मुखाग्नि न देकर अपनी पुत्रवधू से मुखाग्नि दिलवायी।
- उन्होंने विधवा विवाह के समर्थन में कदम उठाते हुए उसके भाई को कहा कि इसको साथ ले जाकर दुबारा विवाह करवा देना।
- वे साधुओं के संबल लेने और गृहस्थों के भिक्षा माँगने का विरोध करते हुए तीस कोस दूर गंगा स्नान करने जाते और उपवास रखते हुए यह यात्रा पूरी करते थे।

अथवा

लेखिका और उसके पिता के विचारों में कुछ समानता के साथ-साथ असमानता भी थी। लेखिका के पिता में विशिष्ट बनने और बनाने की चाह थी पर वे चाहते थे कि यह सब घर की चारदीवारी में रहकर हो, जो संभव नहीं था। वे नहीं चाहते थे कि लेखिका सड़कों पर लड़कों के साथ हाथ उठा-उठाकर नारे लगाए, जुलूस निकालकर हड़ताल करे। दूसरी ओर लेखिका को अपनी घर की चारदीवारी तक सीमित आज़ादी पसंद नहीं थी। यही दोनों के मध्य टकराव का कारण था।

खण्ड - द

21.

(अ) एक हिल स्टेशन की यात्रा

(1) यात्रा का सौंदर्य- घूमने जाने के लिए हमने हिल स्टेशन माउंट आबू को चुना। आबू रोड तक की यात्रा हमने रेलगाड़ी से की। आबू रोड से माउंट आबू जाने के लिए हम राजस्थान परिवहन निगम की बस में सवार हुए। दूर से आबू पर्वत के दर्शन होते ही मेरा दिल उछल पड़ा। उसके सर्पाकार मार्ग पर हमारी बस मंद गति से चल

रही थी। एक ओर शिला-चट्टानों के ऊँचे-ऊँचे ढेर थे, तो दूसरी ओर बीहड़-गहरी खाइयाँ। हरे-भरे दृश्य और शीतल पवन मन को एक निराला ही आनंद दे रहे थे।

(2) आवास-व्यवस्था- बहुत ऊँचाई पार करने के बाद हमारी बस रघुनाथ मंदिर के निकट खड़ी हो गई। उस समय सुबह के नौ बज रहे थे। सड़कों पर मेटाडोर, जीपें और कारें दौड़ रही थीं। जगह जगह टूरिस्ट गाइड सेंटरों, होटलों और यात्री आवासों के साइन बोर्ड लगे हुए थे। हम भी एक लॉज में उतरे। पिताजी ने वहाँ एक कमरा पहले से ही आरक्षित करा लिया था।

(3) देलवाड़ा के जैन मंदिर- भोजन और विश्राम के बाद हम आबू के प्रसिद्ध और ऐतिहासिक देलवाड़ा मंदिर देखने गए। उन मंदिरों को देखकर हम दंग रह गए। चारों ओर कला का साम्राज्य फैला हुआ था। देवरानी जेठानी के झरोखों ने तो सचमुच हमारा दिल जीत लिया। नक्काशी की अनोखी बारीकी और शिल्प की सजीवता देखकर हम देखते ही रह गए। वहाँ उपस्थित विदेशी पर्यटकों को मैंने देलवाड़ा के मंदिरों की कलात्मकता की प्रशंसा करते कई बार सुना था। आज उन्हें प्रत्यक्ष देखा। एक गाइड ने हमें पूरे विस्तार से बताया कि किस प्रकार तेजपाल और वस्तुपाल ने उन मंदिरों का निर्माण कराया था।

(4) अन्य दर्शनीय स्थल- अगले दिन हमने टॉड रॉक और पोलो ग्राउंड देखा। फिर हम वशिष्ठाश्रम गए। अचलगढ़ पर स्थित मंदिर तथा भर्तृहरि की गुफा भी हमने देखी। पिताजी हमें अर्बुदा देवी के मंदिर में ले गए। नखी तालाब में हमने नौकाविहार का मजा लूटा और सनसेट प्वाइंट पर सूर्यास्त का मनोहर दृश्य भी देखा। एक दिन हमने आबू के सबसे ऊँचे गुरु शिखर पर दत्तात्रेय के पदचिह्नों के भी दर्शन किए। वहाँ बँधे विशाल घंटे को कई बार बजाकर मैंने उसकी कर्णप्रिय ध्वनि का आनंद लिया।

इस प्रकार आबू पर्वत पर एक सप्ताह बिताकर हम वहाँ से बिदा हुए। कितना प्रफुल्लित था मेरा मन! उस सौंदर्यधाम की हवा में निराली मस्ती थी। मैं अपने अंग-अंग में अनोखी ताजगी का अनुभव कर रहा था। आबू पर्वत की इस यात्रा ने हममें भरपूर आनंद और उत्साह भर दिया था। वहाँ के कलात्मक वैभव की मधुर स्मृतियाँ आज भी हमें आनंद का अनुभव कराती हैं।

अथवा

(ब) शीत ऋतु

(1) शीत ऋतु का परिचय- भारत एक ऋतुओं का देश है। भारत में छ: ऋतु हैं जो निरंतर चलती रहती हैं। भारत की छ: ऋतु बसंत ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, हेमंत ऋतु और शीत ऋतु हैं। शीत ऋतु का आगमन शरद ऋतु के बाद और बसंत ऋतु के आगमन पर समाप्त होती है। भारत में शीत ऋतु बहुत अधिक ठंडी ऋतु होती है। शीत ऋतु का समय नवम्बर मास से लेकर फरवरी मास तक होता है। भारत देश में नवम्बर में शुरू होने वाली ठंड दिसम्बर आते-आते भीषण ठंड में बदल जाती हैं। शीत ऋतु में दिन प्राय: छोटे और रातें लंबी होती हैं। सूर्य की गर्मी जो लोगों को ग्रीष्म ऋतु में अच्छी नहीं लगती वह गर्मी सभी लोगों को शीत ऋतु में अत्यंत प्रिय लगने लगती है।

कभी-कभी तो घने बादलों, कोहरे और धुंध की वजह से सूरज को देखना भी असंभव लगता है। शीत ऋतु के दौरान गीले कपड़ों के सूखने में बहुत परेशानी होती है। शीत ऋतु के दौरान कोहरा और धुंध बहुत ही सामान्य होते हैं, जो सड़कों पर अधिक भीड़ और दुर्घटनाओं के कारण बनते हैं। हमें सर्दियों से बचने के लिए बहुत से गर्म कपड़े पहनने चाहिए और अपने घरों में रहना चाहिए। शीत ऋतु में अधिक सर्दी के कारण बहुत से पक्षी पलायन कर जाते हैं और पशु शीत निंद्रा में चले जाते हैं।

(2) शीत ऋतु का आगमन- भारत में शीत ऋतु के शुरू होने की अवधि क्षेत्रों ओर पृथ्वी के अपने अक्ष पर सूर्य के चारों ओर घूमने के अनुसार अलग-अलग होती है। सभी को यह पता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना ही पूरे साल भर मौसम और ऋतुओं के बदलने में मुख्य भूमिका निभाता है। जब पृथ्वी उत्तरी गोलार्द्ध पर चक्कर लगाती है तब उत्तरी गोलार्द्ध पर सर्दी होती है। ऋतुएँ तब बदलती हैं जब पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर 23.5 डिग्री सूर्य की ओर झुकी हुई है। दक्षिण के लोगों के लिए सर्दियों के महीने जून, जुलाई और अगस्त होते हैं। भारत में शीत ऋतु का हिमालय पर्वत से बहुत गहरा संबंध होता है। जब हिमालय पर्वत पर बर्फबारी होती है और उत्तर दिशा की ओर से हवाएं चलना शुरू हो जाती हैं तो भारत में शीत ऋतु का आगमन होता है।

सर्दियों के दौरान पहाड़ी क्षेत्र बहुत ही सुंदर दिखने लगते हैं क्योंकि उन क्षेत्रों में सब कुछ बर्फ की चादर से ढका होता है और प्राकृतिक दृश्य की तरह बहुत सुंदर दिखाई देता है। सभी वस्तुओं पर पड़ी बर्फ मोतियों के समान दिखाई देती है। सूर्य के उदय होने पर तरह-तरह रंग के फूल खिलते हैं और वातावरण को एक नया रूप देते हैं। कम तापमान वाली सूर्य की रोशनी की वजह से सर्दियों के दिन बहुत ही अच्छे और सुहावने होते हैं। दिसम्बर और जनवरी सबसे अधिक ठंड वाले मौसम होते हैं जिनके दौरान अधिक ठंडा मौसम होने की वजह से हम बहुत अधिक परेशानी महसूस करते हैं।

(3) शीत ऋतु का महत्व- शीत ऋतु का हमारे जीवन में बहुत महत्व होता है। भारत में शीत ऋतु सबसे महत्वपूर्ण मौसम है जो शरद संक्रांति पर शुरू होता है और बसंत विषुवत पर खत्म हो जाता है। शीत ऋतु स्वास्थ्य का निर्माण करने का मौसम होता है हालाँकि पेड़-पौधों के लिए बुरा होता है, क्योंकि वे बढना छोड़ देते हैं। बहुत से जानवर असहनीय ठंडे मौसम के कारण शीतकालीन निद्रा में चले जाते हैं। इस मौसम के दौरान बर्फ गिरना और सर्द तूफानों का आना सामान्य बात है। शीत ऋतु में हम अनेक गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं। शीत ऋतु में हम आइस-स्केटिंग, आइस-बाइकिंग, आइस-हॉकी, स्कींग, स्नोबॉल फाइटिंग, स्नोमैन को बनाना, स्नो-कैसल आदि बहुत सी रुचिकर गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

(4) शीत ऋतु की विशेषताएँ- शीत ऋतु में अन्य ऋतुओं की तुलना में बहुत अधिक बदलाव होते हैं जैसे- लंबी रातें, छोटे दिन, ठंडा मौसम, ठंडी हवा, बर्फ का गिरना, सर्दी तूफान, ठंडी बारिश, घना कोहरा, धुंध, बहुत कम तापमान आदि। कभी-कभी जनवरी के महीने में तापमान 1 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। इस समय में सर्दी अपनी चरम सीमा पर होती है। नवंबर के महीने से ही ठंडी हवाएँ चलनी शुरू हो जाती हैं। जब सर्दी अधिक बढ़ जाती है तो स्कूलों में सर्दियों की छुट्टियाँ कर दी जाती हैं। इस मौसम में लोग

अधिक ऊर्जावान और क्रियाशील रहते हैं। दिन छोटे होते हैं और रात लंबी होती हैं। लोग अधिक घंटे काम करने के बाद भी थकते नहीं हैं।

सर्दी का मौसम बर्फीला और उपयोगी मौसम है। इस मौसम में हमें काम करने में परेशानी होती है हालाँकि सूर्य भी काम करने के लिए उपयुक्त होता है और हमें सूरज के सामने बैठना अच्छा लगता है। शीत ऋतु में सब कुछ ताजा और सुंदर दिखाई देता है।

अथवा

(स) मेरी प्रथम रेल यात्रा

(1) मेरी प्रथम रेल यात्रा का परिचय- मनुष्य की जिज्ञासा कभी भी एक ही स्थान पर और एक ही उद्देश्य तक सीमित नहीं रहती है। किसी भी यात्रा का अपना अलग सुख होता है। यात्रा करना बहुत लोगों को पसंद होता है। स्थल यातायात में रेलगाड़ी का बहुत महत्व होता है। हमारे भारत में सारे देशों को रेल लाईनों से जोड़ा गया है। मैंने बस से तो कई बार यात्रा की है लेकिन रेलगाड़ी से एक बार भी यात्रा नहीं की है। लोगों से अधिक बच्चे अपनी पहली यात्रा पर उत्सुक होते हैं। लोगों को दूर की यात्रा में बस की जगह रेल अधिक आनंद देती है। बस में सोने, इधर-उधर फिरने की सुविधा नहीं होती है लेकिन रेल में सभी सुविधाएँ होती हैं।

मेरे पिता जी एक सरकारी पुलिस अधिकारी हैं। उन्हें अपने बड़े अधिकारियों द्वारा एक माह का अवकाश मिलता है। ग्रीष्म ऋतु के समय में मेरे पिता जी ने कश्मीर जाने का कार्यक्रम बनाया। इस सुनहरे अवसर पर हम सभी ने रेलगाड़ी द्वारा कश्मीर जाने की योजना बनाई थी। मैं बहुत आनंदित था कि मैं अपनी पहली यात्रा को पूर्ण करने जा रहा था। कश्मीर जाने के लिए हम सभी लोगों में तैयारी के लिए भाग-दौड़ शुरू हो गयी थी। पिताजी ने हमें बताया कि हमारे पास कम-से-कम दो-दो आधी बाजुओं के स्वेटर और दो-दो पुलोवर अवश्य होने चाहिए। हमारी माता जी ने हमारे पहनने और खाने के लिए बहुत सा सामान रख लिया था।

(2) मेरी यात्रा का आरंभ- हम सभी लोग 18 जून को पहली रेल यात्रा को करने के लिए घर से निकल पड़े थे। हम पूरे चार लोग थे मेरे माता-पिता, मैं और मेरी छोटी बहन आदि। मेरी छोटी बहन भी अपनी पहली यात्रा के समय बहुत आनंदित थी। हम सभी जरूरतमंद सामान लेकर ऑटो द्वारा रेलगाड़ी के स्टेशन पहुंचे थे। हमारी पहली यात्रा की शुरुआत स्टेशन से हुई थी। हम लोगों ने अपनी टिकट स्टेशन से खरीदी। स्टेशन से हम जो चाहें खरीद सकते हैं। उस दिन हम लोग बहुत जल्दी स्टेशन पर पहुंच गये थे। हमारी गाड़ी को प्लेटफार्म न. 2 पर आना था इसी वजह से हम सभी लोग प्लेटफार्म न. 2 पर जाकर बैठ गये। हम सब का पहले से ही आरक्षण था। हम अपने आरक्षित डिब्बे में पहुंच गये और हमारी सीटें पहले से ही निर्धारित की जा चुकी थीं। हम अपनी निर्धारित की हुई सीटों पर आरामपूर्वक बैठ गए। हमारी तरह ही सब लोग भी अपनी-अपनी निर्धारित सीटों पर जाकर बैठ रहे थे। गाड़ी को कश्मीर के लिए प्रस्थान में अभी 10 मिनट थीं। गार्ड के सिटी बजाने और हरी झंडी दिखाने पर 10 मिनट के बाद रेलगाड़ी ने कश्मीर के लिए प्रस्थान किया।

(3) रेल के बाहर पर्वतीय दृश्य- हम सभी लोग अपनी पहली यात्रा को करते समय बहुत खुश थे। मैं अपनी निर्धारित जगह पर बैठकर रेलगाड़ी से बाहर के दृश्य का आनंद ले रहा था। खिड़की से बाहर सभी तरह के दृश्य सामने आ रहे थे और वो अपने दर्शन देकर पीछे दूर जाकर छिप जाते थे। उन दृश्यों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे साथ आँख-मिचोली खेल रहे हों। मुझे अपनी पहली रेल यात्रा में बहुत आनंद आ रहा है। मुझे बाहर के दृश्य अत्यंत ही मोह लेने वाले लग रहे हैं। रेलगाड़ी से बाहर हरियाली से भरे खेतों का और महल तथा अट्टालिकाओं से भरे शहर का दृश्य बहुत ही मनमोहक लग रहा था।

हम एक पल खेतों से गुजर रहे होते हैं तो एक पल शहर से गुजर रहे होते हैं। इतने कम समय में इतनी विविधता मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। हमारी रेलगाड़ी बड़े-बड़े शहरों, नगरों, खेतों, नदियों, और जंगलों को पार करती हुई तीसरे दिन सुबह कश्मीर पहुँची थी।

(4) यात्रा की समाप्ति- हमारी रेलगाड़ी अपने स्थान पर पहुँच गयी थी। रेलगाड़ी के अच्छी तरह से रुक जाने की वजह से हम अपना सामान नीचे उतार सके। वहाँ पर सामान को उठाने के लिए कुलियों की व्यवस्था थी। प्लेटफार्म पर उसी तरह की चहल-पहल थी जिस तरह की मुंबई में थी। वहाँ पर भी रेलगाड़ियों के आने-जाने के विषय में घोषणाएँ हो रही थीं। वहाँ पर चाय वाले, राशन वाले, नाश्ते वाले सामान को खरीदने के लिए विवश कर रहे थे। कुली हमारा सारा सामान प्लेटफार्म से बाहर ले आया और हमने सबसे पहले एक गाइड ढूँढा, क्योंकि हमें कश्मीर का ज्ञान नहीं था। एक गाइड हमारे पास आया और हमने उसे अपनी योजना के विषय में बताया। तब उसने कश्मीर में हमारा मार्ग-दर्शन किया था। हमारी रेल यात्रा यहीं पर समाप्त हो गयी थी।

यह मेरी पहली यात्रा का बहुत ही रोमांचक वर्णन है। मेरी पहली रेलयात्रा मेरे लिए जीवन भर अविस्मरणीय रहेगी। रेलयात्रा एक बहुत ही आनंदमय यात्रा होती है। हमारे देश में रेलगाड़ियों की संख्या तो बढ़ गयी है लेकिन फिर भी भीड़ में कोई कमी नहीं आई है। भीड़ पहले से भी अधिक हो गयी है। हमारी सरकार को रेल व्यवस्था में बहुत सुधार करने चाहिए और रेलगाड़ियों की संख्या में भी वृद्धि करनी चाहिए।

अथवा

(द) मेरा विद्यार्थी जीवन

(1) परिचय- एक समय आता है जब बालक या युवक किसी शिक्षा-संस्था में अध्ययन करता है, वह जीवन ही विद्यार्थी जीवन है। कमाई की चिंता से मुक्त अध्ययन का समय ही विद्यार्थी-जीवन है। भारत की प्राचीन विद्या-विधि में पच्चीस वर्ष की आयु तक विद्यार्थी घर से दूर आश्रमों में रहकर विविध विद्याओं में निपुणता प्राप्त करता था, किन्तु देश की परिस्थिति-परिवर्तन से यह प्रथा गायब हो गई। इसका स्थान विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों ने ले लिया। इन तीनों संस्थाओं में जब तक बालक या युवक पढ़ते है, वह विद्यार्थी कहलाते है।

वह दिन मुझे आज भी याद है जब मेरी माँ पहले दिन मुझे पाठशाला ले गई थी। मेरे हाथ में छोटा-सा रंगीन बैग था। इस बैग में नाश्ते का डिब्बा (टिफ़िन) और पानी की बोतल थी। माँ मुझे शिशु वर्ग में ले गई। शिक्षिका ने प्रेमपूर्वक मुझे अपने वर्ग में बिठा दिया। इस तरह मेरे विद्यार्थी जीवन का श्रीगणेश हुआ अर्थात् आरंभ हुआ।

(2) अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता- अध्यापक श्री गुप्ता सर तथा श्री मिश्रा सर को मैं बहुत मानता हूँ। गुप्ताजी ने गणित और विज्ञान में मेरी रुचि बढ़ाई। उनके मार्गनदर्शन से ही एस.एस.सी. परीक्षा में मुझे गणित में शत-प्रतिशत और विज्ञान में 97 प्रतिशत अंक मिले। मिश्राजी ने कंप्यूटर में इतनी अच्छी ट्रेनिंग दी कि आज मैं किसी भी प्रोजेक्ट पर आसानी से काम कर सकता हूँ।

(3) सहपाठियों की यादें- अपने सहपाठियों से जुड़ी अनेक यादें मन को आनंदित कर देती हैं। मेरे सभी साथी हँसमुख, शरारती और परिश्रमी थे। उनके साथ मैंने अनेक कार्यों में भाग लिया था।

आज भी मुझे याद आता है स्कूल का वह विदाई समारोह। उस दिन अपने प्रिय साथियों एवं स्नेही गुरुजनों से बिछुड़ते हुए हृदय मानो फटा जा रहा था। इस प्रकार अपने विद्यार्थी जीवन की अनेक घटनाएँ मेरे मन को गुदगुदाती रहती हैं।

(4) एक विद्यार्थी का कर्तव्य- विद्यार्थी-जीवन उन विद्याओं, कलाओं के शिक्षण का काल है, जिनके द्वारा वह छात्र-जीवन में ही कमाई कर अपने परिवार का देखभाल कर सके यही एक विद्यार्थी का कर्तव्य है। यह काल संघर्षमय संसार में सम्मानपूर्वक जीने तथा निर्माण करने का समय है। इन सबके निमित्त सीखना, शारीरिक और मानसिक विकास करने, नैतिकता द्वारा आत्मा को विकसित करने की स्वर्णिम समय है यह विद्यार्थी जीवन। निश्चित-पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र सीखता है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों के अध्ययन तथा आचार्यों के प्रवचनों से वह मानसिक विकास करता है। शैक्षणिक-प्रवास और भारत-दर्शन कार्यक्रम उसके मानसिक-विकास में विकास करता हैं। हर रोज सुबह उठकर व्यायाम कर अपना शारीरिक विकास करता है।

विद्यार्थियों को अपने विद्यार्थी जीवन काल में अपनी उचित शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल कूद और व्यायाम पर पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए तथा उन्हें इस विद्यार्थी जीवन में बहुत ही परिश्रमी और लगनशील होना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए उचित शिक्षा प्राप्त करना बहुत ही आवश्यक है। इसी प्रकार और भी ऐसी बहुत सी महत्वपूर्ण बातें हैं जो विद्यार्थी जीवन की यादें बताते है। विद्यार्थी का उचित लगन, उनका कर्तव्य, समाज के प्रति योगदान आदि उन्हें सफल और बेहतरीन भविष्य की ओर ले जाती हैं। विद्यार्थी जीवन किसी भी मनुष्य के जीवन का सबसे अच्छा और यादगार काल होता है।

22. परीक्षा भवन,
623 , सुभाष चंद्र बोस मार्ग,
नई दिल्ली -2220058,
दिनांक : 22 दिसम्बर 20XX,
प्रिय दोस्त प्रवीण,
मधुर स्नेह।

आशा है तुम स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे और अपने स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त होंगे। दोस्त प्रवीण मैं आज तुम्हें एक विशेष प्रयोजन से यह पत्र लिख रहा हूँ। दरअसल मेरे बड़े भाई की शादी 22 दिसम्बर 20XX को होनी निश्चित हुई है। शादी का कार्यक्रम दो दिवसीय है। अत: आप सपरिवार मेरे बड़े भाई की शादी में आमंत्रित हैं।

मैं आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार के साथ मेरे बड़े भाई की शादी में सम्मिलित होने अवश्य आओगे। हम अपने अन्य दोस्तों के साथ मिलकर खूब मौज मस्ती करेंगे।इसीलिए तुम शादी में अवश्य आना। मुझे तुम्हारा इंतजार रहेगा।

तुम्हारा दोस्त
क.ख.ग

अथवा

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय नं. 4,
शक्ति नगर, दिल्ली।

विषय- अंग्रेजी और गणित विषयों की अतिरिक्त कक्षाओं के आयोजन के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारी एस.ए.-1 की परीक्षाएँ सितंबर माह में होनी हैं, परंतु अंग्रेजी और गणित का पाठ्यक्रम अभी ठीक से शुरू भी न हो सका है। इसका कारण है- अंग्रेजी और गणित विषयों के अध्यापकों का अवकाश पर रहना। इधर अगस्त महीने का दूसरा सप्ताह भी बीत चुका है, ऐसे में बिना अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित करवाए पाठ्यक्रम समय पर पूरा हो पाना असंभव है। अतः हम छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए छुट्टी के बाद अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित कराकर हमारा कोर्स पूरा करवाया जा सकता है। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अंग्रेजी और गणित विषयों की अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित करवाने की कृपा करें। हम छात्र आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मनोज
मॉनीटर दसवीं 'अ'
17 अगस्त, 20xx

23.

सीखिए — सीखिए

गुरुजी कम्प्यूटर सेन्टर

आज की जरूरत
आप भी सीखिए

- कम्प्यूटर का ज्ञान
- कम्प्यूटर सीखने के साथ
- इंग्लिश स्पीकिंग फ्री

अनुभवी शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण
सभी कम्प्यूटर नये
आज ही प्रवेश लें।

कम फीस
उत्तम ज्ञान

अथवा

धमाका — धमाका

कोचिंग की दुनिया में धमाका
उत्कर्ष कोचिंग सेन्टर

क्या आपका बच्चा विज्ञान, गणित, अंग्रेजी विषयों से डरता हैं?
क्या उसे अच्छे अंक नहीं मिलते हैं?
तो आइए उत्कर्ष कोचिंग सेन्टर
स्थान: विनोद टॉवर जोधपुर

- विषय विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण
- कम फीस
- छोटे बैच

सम्पर्क करें:- 76650000000